B.A. II - Sem IV

Paper - C - 8

History of West Asia

मध्यपूर्व में तेल की भूमिका

मध्यपूर्व में तेल काला स्वर्ण के रूप में विख्यात है। मध्यपूर्व की राजनीति में भी इसकी भूमिका अहम् रही है। विश्व की आवश्यकताओं का 2/3 भाग यह पूरा करता है। अमेरिका में तेल का दैनिक उत्पादन 11 बैरल्स, वेनेजुला में 20 बैरल्स, जबकि मध्यपूर्व में 400 बैरल्स है। विश्व का 66% तेल ईरान की खाड़ी के आसपास कुवैत, ईरान, ईराक आदि स्थानों में पाया जाता है। यद्यपि इस ओर अमेरिका तेल के मामले में आत्मनिर्भर है पर यूरोप अपनी आवश्यकता की 80% पूर्ति मध्यपूर्व के तेल से करती है। इतना ही नहीं जापान एवं भारत भी इस पर निर्भर हैं।

तेल की राजनीति ने उपनिवेशवाद और साम्यवाद के शासक और जनता के नाम पर हस्तक्षेप के अवसर प्रदान किए हैं, परिणामस्वरूप देशों में विद्रोह व राजनैतिक अस्थिरता इस राजनीति के कारण उत्पन्न होती रही है।

P.T.O.

Scanned with CamScanner

मध्यपूर्व में तेल का महत्व

होती रही है। जार्ज ई० विंक (George, E. Wirk) का कथन है - "तेल राष्ट्रों का दिशा निर्देशक है; चाहे वे छोटे हों अथवा बड़े; तेल बड़ी शक्तियों की विदेश नीति और आपसी संबंधों को निश्चित करने वाला महत्वपूर्ण तत्व रहेगा।" पश्चिमी देश अपने जीवन के लिए और पश्चिमी एशिया के देश अपने व्यापार और स्थायित्व के लिए तेल की खरीद-बिक्री पर निर्भर है। इसके परिणामस्वरूप दोनों की राजनीति और सम्बन्ध तेल की खरीद और बिक्री निर्धारित करती है।

विश्व के दो बड़े राष्ट्र संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत रूस की प्रतिद्वन्द्विता के कारण पश्चिम एशिया शीत युद्ध का केन्द्र बना हुआ है। तेल की प्राप्ति के लिए जिन देशों ने दौड़ लगाई है, उनका भी प्रयत्न लाभ की ओर रहा है। इसलिए पश्चिमी एशिया भी राजनीति में सदैव उथल-पुथल रहता है।

तेल का महत्व इस बात से है कि वह शीतयुद्ध को गर्म युद्ध में परिवर्तित कर सकता है।

Scanned with CamScanner

मध्यपूर्व में तेल का महत्व

ईरान की राजनीति में तेल ने महत्वपूर्ण प्रभाव दिखाया। शाह को देश छोड़ना पड़ा और प्रधानमंत्री को गोली मार दी गई। चार्ल्स इसावी कहता है "मध्येशिया में आन्तरिक अराजकता और प्रजातंत्र की असफलता का कारण का कारण विदेशी राजनीति का प्रभाव रहा है। जब तक विदेशी हस्तक्षेप रहेगा, मध्यपूर्व में प्रजातंत्र न विकसित हो सकता है और न सुदृढ़शाली।"

यूरोपीय देशों की तेल व्यापार में जो पूँजी लगी हुई है उसके कारण पश्चिम एशिया में विदेशी हस्तक्षेप पूंजी सुरक्षा के नाम पर बढ़ गई। पूंजीवादी देश अपने इस नए साम्राज्यवाद को प्रत्येक कीमत पर बनाए रखना चाहते थे।

तेल को लेकर पश्चिम एशिया के देशों पर यूरोपीय देश तथा अमेरिका का आर्थिक नियंत्रण भी कायम है।

तेल का महत्व ही ईरान और ब्रिटेन की कटुता का कारण बना। 1920 ई० में पूर्वी तेल के साधनों के शोषण हेतु लंदन और पेरिस में एक समझौता हुआ।

मध्यपूर्व में तेल का महत्व

1932 ई० में पौंड की कीमत गिर गई, इससे तेल की कीमत भी गिर गई। इस कारण ब्रिटेन ने ईरान की तेल की रॉयल्टी भी कम कर दी। इससे रुष्ट होकर ईरान के शाह ने ब्रिटेन को दी जाने वाली सुविधा बन्द कर दी। यहीं से ही ऐंग्लो-ईरानियन तेल विवाद प्रारंभ हो गया। मामला राष्ट्रसंघ पहुँचा। परंतु 1933 ई० में दोनों देशों में एक समझौता हो गया। यह समझौता 1988 तक के लिए था।

इस प्रकार मध्यपूर्व के इतिहास में तेल का महत्व अति महत्वपूर्ण है।

— 00 —

A. Kumari